



जब सिनेमा ने बोलना सीखा

पाठ से:

प्रश्न 1: जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन से वाक्य छापे गये थे? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर निम्नलिखित वाक्य छपे थे, “वे सभी सजीव हैं, सांस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इंसान जिन्दा हो गए, उनको बोलते बातें करते देखो”।

इस वाक्य से पता चलता है कि उस फिल्म में अठहत्तर चेहरे थे।

प्रश्न 2: पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया? विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर: अर्देशिर ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की बोलती फिल्म ‘शो बोट’ देखी थी। इसी फिल्म से उन्हें आलम आरा बनाने की प्रेरणा मिली थी। उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को अपनी फिल्म का आधार बनाया था।

प्रश्न 3: विट्टल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप में हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया? विट्टल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया? विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर: विट्टल की उर्दू अच्छी नहीं होने के कारण उन्हें आलम आरा के नायक के रूप में हटा दिया गया। विट्टल उस समय के सफल कलाकार हुआ करते थे। वे नाराज हो गये और उन्होंने अर्देशिर ईरानी पर मुकदमा दायर कर दिया। उनका मुकदमा उस समय के मशहूर वकील जिन्ना ने लड़ा था। विट्टल मुकदमा जीत गये और अंततः आलम आरा के नायक बने। यहाँ पर यह जाहिर होता है कि कैसे एक कलाकार अपने अहं के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।

प्रश्न 4: सवाक फिल्म के निर्माता निर्देशक अर्देशिर ईरानी को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था? अर्देशिर ने क्या कहा? इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है?

उत्तर: सम्मानकर्ताओं ने अर्देशिर को ‘भारतीय सवाक फिल्मों का पिता’ कहा। अर्देशिर ने कहा कि वो इतनी बड़ी उपाधि के लायक नहीं थे बल्कि उन्होंने देश के लिए अपना भरसक योगदान करने की कोशिश की थी। लेखक ने इस प्रसंग में अर्देशिर की विनम्रता की तारीफ की है।

पाठ से आगे :

प्रश्न 1: मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर जब सिनेमा बोलने लगा उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।

उत्तर: बोलती फिल्म के आने से अभिनेताओं को अपनी अभिनय शैली में परिवर्तन करना पड़ा होगा। उन्हें अपनी भाषा और बोलने की कला को नये परिवेश के हिसाब से ढालना पड़ा होगा।

दर्शकों के लिए सिनेमा को समझ पाना आसान हो गया होगा। उनका रोमांच भी बढ़ गया होगा। वे ज्यादा आसानी से कल्पना की दुनिया में डूब जाते होंगे।

आवाज रिकार्ड करने की नई तकनीक खोजने की जरूरत पड़ी होगी जिससे शोर कम किया जा सके।

प्रश्न 2: डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी-कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुंह खोलने और आवाज में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?

उत्तर: जब किसी एक भाषा की फिल्म में दूसरी भाषा की आवाज डाली जाती है तो उसे डब करना कहते हैं। हर भाषा की अपनी बारीकियां होती हैं। चाहे कितना भी अच्छा डब करने वाला कलाकार हो और कितनी भी आधुनिकतम तकनीक इस्तेमाल हो, भाषा की बारीकियों का अंतर नहीं मिटाया जा सकता है।

जब भारत में केबल टीवी नया-नया आया था तब यहाँ के डब करने वाले कलाकार सीख ही रहे थे। उस समय वे बहुत अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाते थे। अब ज्यादातर फिल्मों में डबिंग बहुत अच्छी हो गई है। अब बहुत गौर से देखने पर ही तालमेल का अंतर देखा जा सकता है।

भाषा की बात:(व्याकरण)

Q1 :

सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाएँ और शब्दार्थ में होने वाले परिवर्तन को बताएँ। हित, परिवार, विनय, चित्रा, बल, सम्मान।

Solution :

शब्द - उपसर्ग वाले शब्द

- | | | |
|-------|----------|---------|
| (i) | हित - | सहित |
| (ii) | परिवार - | सपरिवार |
| (iii) | विनय - | सविनय |